

तुलसी महिमा

नमो नमो माँ तुलसी रानी।
नमो नमो हरि की पटरानी।।
जागो आई मातु जगाने।
प्रेम भाव के पुष्प चढाने।।

विनती मोरी सुन लो मैया।
सुख की हमको दे दो छैया।।
प्रेम कलश भर नीर चढाऊँ।
धूप दीप सेवा में लाँऊ।।

प्रेम भाव से सिंचन करते।
अन-धन के भण्डारे भरते।।
कतकी मास कल्याण दाता।
वरदायक है तुलसी माता।।

दूल्ह सालिग रामजी आए।
एकादश में ब्याह रचाए।।
खुशियों की गुँजी शहनाई।
भक्ति नै मिल गई बधाई।।

मोद मुदित मन मंगल रीझो।
भक्ति वरदान हमको दीजो।।
दुख दरिद्र निकट नहीं आता।
जो नित मंगल दीप जलाता।

तुलसी माँ सुख संपत्ति दाता।
भक्तों की तुम भाग्य विधाता।।
हाथ जोड़ कर तुम्हें मनाएं।
चरण कमल रज शीश चढाएं।।

मेरे अलगुण बिसरा देना।
माँ आँचल की छैया देना।।
माँ 'सीमा' तेरी बालक है।
तू माता सबकी पालक है।।



सीमा गर्ग मंजरी

कृष्ण प्रिया शुभ मंगल दाता।
जो जन मात शरण में आता।।
अंत समय मुख में दल रहता।
यम की त्रास से मुक्ति पाता।।

अक्षत,पुष्प ले थाल सजाए।
करें आरती जन सुख पाएं।।
दास सहज में दर्शन पाता।
मानव जन्म सफल हो जाता ।।

षडरस व्यंजन खूब बनाए।
पकवानों से थाल सजाए।।
छप्पन व्यंजन भोग लगाए।
तुलसी से हरि खूब मनाए।।

राखो मेरी लाज भवानी।
'सीमा' महिमा रोज बखानी।।
जीवन में मंगल सुख आता।
चित्त लगा के पाठ जो गाता।।

मेरठ कैंट उत्तर प्रदेश